## रविवार, दिनाँक 04-02-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

## दुनियाँ वाले, दुनियाँ वाले समझ नहीं पये सकदे कि तुसीं कौन हो

## और क्या हो, मेरे साजन जी, मेरे साजन जी !

सजनों साजन कोई खोज का ज़रिया नहीं है। अतः साजन की कहीं भी खोज करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वही सुरत के आधार हैं और सदा उसके संग रहते हैं। जानो उनकी खोज में जो निकलता है वह आत्म-विस्मृत होता है यानि सत्य से अपरिचित होता है। इस तथ्य के दृष्टिगत हमने इस सत्य को स्वीकारना है कि साजन है तो ही हम हैं अन्यथा हमारा कोई वजूद नहीं। अतैव हर सुरत के लिए बनता है कि वह श्री साजन, जो उसके जीवनाधार हैं, उनका सहर्ष कहना मानना अपने स्वभाव के अन्तर्गत करे।

इस विषय में ज्ञात हो कि जो भी सजन - साजन की खोज में निकलता है, वह अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हुआ मूर्ख इन्सान होता है क्योंकि वह ईश्वर को पाने हेतु कई-कई प्रकार के बाल-अवस्था के भक्ति-भाव अपनाता है। सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के पास होते, हम से ऐसी भूल कदापि नहीं होनी चाहिये क्योंकि यह ग्रन्थ हमें स्पष्टतया इस विचार से परिचित कराता है 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश, ईश्वर है जे अजना जाप'। इसीलिए अन्तर्मुखी बने रह, सदा आत्मीयता युक्त भाव-स्वभाव अपनाओ। ऐसा करने से स्वयंमेव आत्मज्ञानी बन जाओगे और परिपूर्णता के प्रतीक कहलाओगे। जानो आत्मज्ञानी पूर्ण रूप से जगत के हर विषय से परिचित होता है, इसलिए वह जानता है कि मुझे जीवन में क्या करना है और क्या नहीं करना यानि क्या करना मेरे लिए उचित है और क्या अनुचित है? यही नहीं वह यह भी जानता है कि करने योग्य कार्य मुझे कैसे करना है ताकि उसका अच्छा नतीजा आए। आशय यह है कि उसे सब ज्ञात होता है। तभी तो क्रिया करते वक्त, कर्म करते वक्त, उसका मन जगत से आजाद अवस्था में सधा रहता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों, ख़्याल को पलटा खिलाने की आवश्यकता है। इस हेतु इस सूक्ष्म व सत्य बात को समझो और धारण करके मानसिक तौर पर मज़बूत हो जाओ। मानसिक तौर पर मज़बूत होने के लिए स्वयं को विचारपूर्वक कदम-कदम पर परखो और जाँचो कि कही संसार में जो भी हो रहा है, उसे देखकर हम कहीं भ्रमित तो नहीं हो जाते? इस तरह सावधान रहो और अपनी बुद्धि को भ्रमजाल में उलझने मत दो। जानो

ऐसा करने से बुद्धि सदा सत्यज्ञान से प्रकाशित रहेगी और हमारे जीवन का मार्ग प्रकाशमान हो जायेगा। परिणामतया हम निष्कंटक, सफलता से आगे बढ़ते हुए, इसी जीवन में ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाएंगे। सजनों वैसे तो कोई ऐसा लक्ष्य निर्धारित नहीं है, यह तो केवल मन को साधने की बात है। मन को साधने हेतु मान लो कि 'मैं ब्रह्म हूँ'। जब 'मैं ब्रह्म हूँ' तो फिर इस सत्य का बोध कर, ब्रह्म भाव का अपने अन्दर विकास करो और सर्व-सर्व उसी के होने का एहसास करो यानि सर्व ब्रह्म ही ब्रह्म मानो। जब सर्व ब्रह्म ही ब्रह्म है तो विचार करो कि कोई दूसरा कैसे हो सकता है यानि 'यह भी ब्रह्म, वह भी ब्रह्म, सब ब्रह्म ही ब्रह्म'। जानो यह एकरूप होने की यानि मैत्री-भाव अपनाने की बात है। अब जहाँ सजनता का भाव व समभाव-समदृष्टि की युक्ति चलती है, वहाँ जीवन का बिगड़ा हुआ खेल मिनटों में सँवर सकता है। अतः आप भी अपने जीवन के बिगड़े खेल को सँवारने का उद्यम दिखाओ और इस हेतु ध्यान से यह भजन सुनोः-

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं इक तूं इक तू।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**शेष में तूं है गणेश में तूं है, देवी देवतियां विच तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**शिव में तूं है ब्रह्मा में तूं है, जिधर देखां सोहणा तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**सूरज में तूं है चांद में तूं है, तारों में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**वैश्य में तूं है शूद्र में तूं है, क्षत्री ब्राह्मण विच तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**सीता वी तूं है, महाबीर जी वी तूं है, चवंर झुलेंदा लक्ष्मण तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**पर्वतों में तूं है दरख़्तों में तूं है, फुलवाड़ी में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**इन्द्र में तूं है वरुण में तूं है, कुबेर वी नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आंवें सोहणा तूं।।**

**मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे, गल बैजन्ती माला साजे सिंहासन ते सोहणा लगे तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**मस्ताने ने दासियां नूं मस्ती दिखाई मस्ताना बनाया तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

**जीव जन्तु तेरे दासी ने देखे, चारे पासे नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।**

**फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं।।**

सजनों जब कोई ऐसा अद्भुत कर दिखलाता है यानि उसे सर्व-सर्वत्र ईश्वर का ही दर्शन होता है, तो मान लेना चाहिये कि समभाव नज़रों में हो गया। फिर जब समभाव नज़रों में हो जाता है तो उसी भावना के अनुकूल ही जगत की हर वस्तु नज़र आती है। तब एहसास होता है कि सर्व-सर्व वही एक ही एक जगमगा रहा है यानि दूसरा कोई नहीं है। ऐसे में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि वैर किससे करोगे, क्रोध किससे करोगे, निन्दा-चुगली किसकी करोगे, क्या अपनी करोगे?

जानो यथार्थ के विपरीत ऐसे भाव-स्वभाव अपनाने का परिणाम सदा बुरा निकलता है और उसका दुःख सदा खुद को ही भुगतना पड़ता है क्योंकि हकीकत में तो इससे अपना ही नुक्सान हो जाता है। ऐसा न हो इसलिए सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि ज्ञानमय अवस्था में आओ और बैहरुनी वृत्ति में जो भी निगाह आ रहा है उसको अन्दरुनी वृत्ति के मुताबिक विवेकशीलता से समझो। जानो अन्दरुनी वृत्ति में सर्व एकात्मा का आभास होता है जबकि बैहरुनी वृत्ति में वही आत्मा मायाबद्ध नजर आती है यानि आत्मा के स्थान पर जड़ शरीरों का बोध होता है। इसी माया में उलझने पर हम छले जाते हैं और हमारी बुद्धि अज्ञानमय अवस्था में फँस, अपने सामने द्वि-द्वेष का भाव खड़ा कर लेती है। सजनों सजन श्री

शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए ऐसी नादानी कर बैठना, अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारने की बात है। अतः अपने साथ ऐसा नहीं होने देना और समभाव नज़रों में कर समदृष्टि के सबक़ अनुसार, आचार-विचार अपनाते हुए, परस्पर सजनता का व्यवहार करना है। सजनता का व्यवहार करने का अर्थ है - दोषरहित, पापरहित जीवन जीना और परमात्म नाम कहाना। इस संदर्भ में आप भी निर्विकारिता से जीवनयापन करने हेतु दृढ़-निश्चयी हो जाओ और जीवन की हर परिस्थिति में सन्तोष, धैर्य पर दृढ़ता से स्थिर बने रह, सत्य धर्म के पथ पर निष्कामता से चलने का उद्यम दिखाओ। जानो तभी आप कामयाब हो पाओगे अन्यथा नहीं। अब आपका परिणाम आपके अपने हाथ में है। अब आगे सुनोः-

**अपना आप पछानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।**

**रघुवर साडे अन्दर वसदा, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।**

**उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।**

**कौन है वैरी कौन है शत्रु किस नू दुश्मन जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।**

**उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।**

**कौन हंकारी, कौन अभिमानी किस ने शोर हुन पावना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।**

**उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।**

**कौन कुसंगी न लफंगा किस नूं चोर हुण जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।**

**उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।**

**कौन है रोगी, कौन है भोगी किस नूं हुण सतावना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।**

**उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।**

**कौन है ब्राह्मण, कौन है क्षत्री — वैश्य शूद्र किस नूं जानना, रघुवर साडे अन्दर वसदा।।**

**उसे दा हिवे चानणा, सजन अपने घर विच वसदा।**

सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमें अपने आप को भाग्यशाली मानना है क्योंकि इस द्वारे से, हमें बार-बार इस सत्य से परिचित कराया जाता है कि परमात्मा का वास हमारे अन्तर्घट में ही है। कहने का मतलब यह है कि हर वस्तु के अन्तर्घट में उसी का वास है यानि कहीं कोई भिन्न-भेद नहीं है अपितु सर्व वही परमात्मा - एकात्मा के रूप में पसर रहा है। सजनों हम समझते हैं कि यह कोई बड़ी बात नहीं है जोकि हमारी स्मृति में न रह सके और जिसको याद रखते हुए हम सजनता के प्रतीक न बन सकें। यह तो बहुत ही सीधी व स्पष्ट सी बात है। इस सीधी बात को समझते हुए भी, जब तक हम दुर्बुद्धि इन्सान शास्त्र विहित वचनों को नहीं मानते यानि हमारा मन-मस्तिष्क मौन नहीं होता, तब तक हम सत्य को यानि अपने यथार्थ स्वरूप को जान नहीं सकते। नतीजा भ्रमित व मूर्ख इन्सान की तरह अपना अमोलक जीवन बर्बाद कर बैठते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हमें अपने साथ ऐसा द्रोह नहीं करना क्योंकि यह अत्यन्त ही नुक्सान व पीड़ादायक बात है और अपने लिये आप पीड़ा खरीदना मूर्खता है। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जब सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है

**'रघुवर साडे अन्दर वसदा, सजन अपने घर विच वसदा'**

तो उसका मतलब होता है कि परमात्मा अपने घर में यानि हमारे अन्दर वसदा है। अब सजनों जब यह सत्य मान ही लिया है तो उसको पहचानो और धारण करो ताकि आपको इस यथार्थ की प्रतीति हो। इस सन्दर्भ में हो सकता है कि उस वक्त दुई का भाव पैदा हो जाये, पर जब 'रघुवर साडे अन्दर वसदा' कहते-कहते सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि 'सजन अपने घर विच वसदा', तो इससे स्पष्ट होता है कि हमारे अंतर्घट में सब के सजन - परमात्मा का वास है, अतः हमें किसी के प्रति दुर्भाव न रखते हुए, सबके प्रति सजनता का भाव रखना है और सजनता का प्रतीक बनना है। याद रखो जब हम सजनता के प्रतीक बन जाते हैं तो हम अंतर-स्वरूप को अपने भाव-स्वभाव द्वारा बाहर प्रगट कर सकते हैं। जब वह हमारे भाव-स्वभाव द्वारा बाहिर प्रगट होता है तो उसके सद्प्रभाव से स्वयंमेव, परस्पर एकता का वातावरण पनपता है और जीवन सुखद व शान्तमय हो जाता है। सजनों जानो, जब हमारा चित्त शान्त रहता है तो जीव को आनन्द का अनुभव होता है। जब जीव आनन्द अवस्था में आ जाता है तो वह माया से निर्लिप्त अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है। यह सब हम धीरे-धीरे आपको बता रहे हैं ताकि बात आपके हृदय में ठहर जाये। यह बहुत

सरल बात है, हृदय में बात ठहरेगी तभी वह आपके जीवन का अंग बनेगी। जब जीवन का अंग बनेगी तो ही आपके ख़्याल का संग, जिसका अन्दर वास है, उस परमात्मा के संग जा जुड़ेगा। नतीजा मन सब फुरनों से आज़ाद हो संकल्प रहित हो जायेगा। यहाँ संकल्प से आशय है - कुछ प्राप्त करने की इच्छा। इस संदर्भ में जब आप जीवन के वास्तविक सत्य से परिचित हो गये तो समझो कि आपको सब कुछ मिल गया, अब और क्या लेना है? - अन्य शब्दों में जब हृदय सचखण्ड बन गया तो उस सचखण्ड में जिस रूप, रंग, रेखा रहित निरंकार का वास होता है, उसका बोध हो जाता है और जीवन अपने आप सफल हो जाता है। इस तरह गहराई में पहुँच कर सजन हृदय-विदित ब्रह्मज्ञान धारण कर, हीरे की सार को पा जाता है। फिर वह उसका अपने जीवन में परस्पर व्यवहार करते हुए, समर्थता से आगे बढ़ता है और मोक्ष को पा जाता है।

कहने का आशय यह है कि जब जीव यह समझ जाता है कि जिस परब्रह्म की मैं सत्ता हूँ वह सर्व-सर्व एक ही है और कोई भेद नहीं तो वह मोक्ष को पा जाता है। इस तरह वह जो मैं अपने आप को अलग समझता था और अलग रास्ते पर चलता था, वह भ्रम खत्म हो जाता है क्योंकि मेरा विलग अस्तित्व मिट जाता है और सर्व वही एक समरसता से शोभित हो जाता है। सजनों यह कमाल बात है। इस कमाल का ज्ञान होना ही ब्रह्मज्ञानी बनना है और  निष्काम भाव से जीवनयापन करना है। ऐसा होने पर इन्सान के अन्दर कुछ भी प्राप्त करने की कोई कामना नहीं रह जाती, इसलिए इन्सान आत्मतुष्ट कहलाता है। सजनों आप भी ऐसे ही आत्मतुष्ट, ओजस्वी व तेजस्वी इन्सान बन सकते हो। यह किसी भी कारण से कोई कठिन कार्य नहीं है, बस इच्छा प्रबल होनी चाहिये। इस संदर्भ में मानो बुद्धि को पलटा खिलाने के लिये समय तो लगाना ही पड़ता है। समय लगाने से खुद में जबरदस्त परिवर्तन हो जाता है। आपने भी इस स्वाभाविक परिवर्तन को लाना ही लाना है। इस हेतु सजनों, हमें चाहिये कि हम अपने आप को समझा लें और जिस हेतु यह मानव चोला मिला है, उस कारज को समय रहते ही सिद्ध कर लें। समझ आई बात? अब आगे सुनोः-

**(महाबीर जी के मुख के शब्द)**

**देखो श्री राम जी ओ प्रजा विच वसदा।**

**जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।**

**ओ जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।।**

**जम रहे कई मर रहे कई मरने नूं खड़े तैयार।**

**राम नाम बलधार भजो राम नाम बलधार।।**

**श्री राम जी रमणे वाले हो, रम रहे हो भरपूर।**

**राम नाम नूं याद करने वाला है कोई ज़रूर।**

**हां हां है कोई ज़रूर, वाह वाह है कोई ज़रूर।।**

**कोना कोना डाली डाली, श्री राम है भरपूर।।**

**अनुरागी ते सतवादी दी बन्दगी है ओथे मन्जूर।**

**हां हां है ओथे मन्जूर, वाह वाह है ओथे मन्जूर।।**

**राम जपो राम जपो राम जपने दा वेला।**

**राम जपो जीवन बना लौ, जीवन बनावने दा वेला।**

**हां हां जीवन बनावने दा वेला, वाह वाह जीवन बनावने दा वेला।।**

**श्री राम जी दी रोशनी, रोशनी है ओ कमाल।**

**रोशनी ओ सब कोई वर्ते, कोई विरला परखे ओ यार।**

**हां हां कोई विरला परखे ओ यार, वाह वाह कोई विरला परखे ओ यार।।**

सजनों आज तो जो भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से आप तक पहुँच रहा है, वह बहुत सार रूप से बात चल रही है और एक ही धुरी पर चल रही है। अब इस कीर्तन ने स्पष्ट कर दिया है कि जिसको भी मन-मन्दिर में  व्यापत परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है, केवल वही इन्सान अन्दरुनी-बैहरुनी वृत्ति में प्रफुल्लित रह पाता है। इस सन्दर्भ में जानो कि यहाँ जब 'राम' कहते हैं तो परमात्मा को सम्बोधित करते हैं और जब रौशनी कहते हैं तो आत्मा को सम्बोधित करते हैं। जिस-जिस शरीर में इनका निवास है, उस शरीर में चेतन शक्ति का वास होता है। अतः शरीर को चैतन्य करने का माध्यम व शरीर चैतन्य अवस्था में रखने की पूरी प्रकिया कहाँ से आरम्भ होकर कैसे आगे चलती है, वह सब इस कीर्तन के माध्यम से

समझ आ जाती है। सजनों जब यह प्रक्रिया समझ आ जाती है तो कुदरती साईन्स के हिसाब से उस प्रक्रिया को सम अवस्था में साधना होता है ताकि वह किसी भी कारणवश इधर-उधर न हो जाये। यही साधने से अभिप्राय - अपना ख़्याल यानि सुरत यानि चेतन शक्ति को आत्म-स्वरूप में सदा स्थित रखने से है। अगर आपका ख़्याल/सुरत आत्म-स्वरूप में स्थित है तो, जो कुदरत का नियम है - जिधर ख़्याल उधर दृष्टि अपने आप घूम जाती है। आशय यह है कि अगर आपका ख़्याल आत्म-स्वरूप में स्थित है तो आपकी दृष्टि अपने आप उधर ही घूम जाएगी और आप आत्म-दर्शन कर सकोगे और जान जाओगे कि आत्मा में परमात्मा कैसे शोभित हैं। इस संदर्भ में जानो कि देखी हुई बात ख़्याल में उतरती है और ख़्याल में उतरी हुई बात स्मृति में रहती है। स्मृति में आई हुई बात व्यवहार में उतर जाती है व वाणी व कर्म द्वारा प्रगट हो सकती है। सजनों जब ऐसा सुखद घटित हो जाता है तो दूसरा बाकी कोई नहीं रह जाता। सर्व एक ही एक निगाह आता है। ऐसा होने पर इन्सान कह उठता है कि 'मैं ब्रह्म हूँ'। इस ब्रह्म अवस्था को प्राप्त कर वह निर्भय हो जाता है यानि उसको किसी बात का कोई डर नहीं रहता और वह अमरता का प्रतीक बन जाता है। फिर संसार का कोई दृश्य या इंसान उसे भरमा नहीं पाता, कोई उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाता। इस तरह वह अपनी अजर अमर अवस्था में अटल बना रह शान्त अवस्था में बने रहने में कामयाब हो जाता है और जान जाता है कि मुझे शान्ति कहीं और से नहीं लेनी क्योंकि मै ही ब्रह्म हूँ और मैं ही शान्ति-शक्ति प्रदान करने वाला हूँ। मैं ही जीवन शक्ति प्रदान करता हूँ और मैं ही विधि के विधान को जानता हूँ। इस बात को समझते हुए सजनों परमात्मा कहते हैं कि मेरी ही नीति अनुसार सदा बने रहो और उसी नियमावली को स्मृति में रखते हुए निर्विकारी अवस्था में सधे रहो। इस तरह जीवन में जो भी करो, दाता रूप में यानि मानव-धर्म अनुसार करो। यह बात सदा याद रखना जी।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।